‘स्कन्दगुप्त’ नाटक में अभिव्यक्त इतिहास, कल्पना और राष्ट्रीय चेतना

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच (Unit-3)

विषय-सूची

- जयशंकर प्रसाद : एक संक्षिप्त परिचय
- जयशंकर प्रसाद की नाट्य दृष्टि
- 'स्कन्दगुप्त' : एक परिचय
- 'स्कन्दगुप्त' में इतिहास और कल्पना
- 'स्कन्दगुप्त' की राष्ट्रीय चेतना
- निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद : एक सामान्य परिचय

- जयशंकर प्रसाद (1889-1937) छायावादी काव्यधारा के एक युग प्रवर्तक रचनाकार हैं।
- एक कवि, नाटककार, उपन्यासकार तथा कहानीकार के रूप में उन्होंने हिंदी साहित्य की विरासत को समृद्ध किया।
- उन्होंने ब्रज भाषा एवं खड़ी बोली दोनों में रचनाएँ कीं।
- उनकी सर्वप्रसिद्ध काव्यकृति 'कामायनी' पर उन्हें '*मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार*'से सम्मानित किया गया।
- जयशंकर प्रसाद ने गद्य एवं पद्य की समस्त विधाओं को अपनी लेखनी से पर्याप्त समृद्ध किया। लेकिन उनकी अमरकीर्ति का आधार स्तंभ काव्य और नाटक ही है। एक नाटककार के रूप में जयशंकर प्रसाद का स्थान सर्वोपरि है। उनका समस्त लेखन हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

जयशंकर प्रसाद की नाट्य दृष्टि

- जयशंकर प्रसाद ने भारतीय संस्कृति और शास्त्रीय परम्पराओं को आत्मसात कर एक नए सौंदर्य बोध से अनुप्राणित होकर नाटकों का सृजन किया।

- उनके नाटकों की मौलिक विशिष्टता, भारतीयता और आधुनिकता के संघर्ष-मूलक संतुलन में है।

- उन्होंने बहुत सारे नाटकों की सर्जना की जिनमें प्रथम चार नाटकों (सज्जन, कल्याणी परिणय, करुणालय, प्रायश्चित) पर प्राचीन भारतीय नाट्य परंपरा का स्पष्ट प्रभाव है। उनके *'करुणालय'* नाटक को *'हिंदी का प्रथम गीति नाट्य'* माना जाता है।

- अपने ऐतिहासिक नाटकों (चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु) में प्रसाद जी ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली अतीत का चित्रण कर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रयास किया है।

- उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य नाट्य कला का सुन्दर समन्वय अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है। भारतीय नाट्य परंपरा से रस तत्त्व, बहिर्द्वंद और पश्चिमी नाट्य कला से संघर्ष तत्त्व तथा अंतर्द्वंद ग्रहण किया है। भारतीय परंपरा के सुखांत और पश्चिमी परंपरा के दुखांत तत्त्व का समन्वय कर 'प्रसादान्त' नाटकों की रचना की है।

- जयशंकर प्रसाद ने पहली बार अपने नाटकों के पात्रों को स्वतंत्र मानवीय व्यक्तित्व दिया, उनके अन्तर्जगत के सूक्ष्मतम संवेदना तत्वों का मर्म स्पर्शी चित्रण किया, उनकी सामर्थ्य, असामर्थ्य का भी चित्रण किया। इन्हीं अर्थों में प्रसाद जी एक मौलिक एवं विशिष्ट नाटककार हैं।

- नारी पात्रों की रचना में भी उन्होंने एक नवीन दृष्टि अपनायी और वैविध्यमयी नारी पात्रों की रचना की। जयशंकर प्रसाद की नारी पात्र मानव मूल्यों की प्रतीक हैं।

- जयशंकर प्रसाद अपने दौर के एक अनूठे नाटककार हैं जिन्होंने नाटकों में रंगमंच की केन्द्रीय स्थिति को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि "रंगमंच के सम्बन्ध में यह भारी भ्रम है कि नाटक रंगमंच के लिए लिखे जायें। प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि नाटक के लिए रंगमंच हों, जो व्यावहारिक है।..... काव्यों (नाटकों) की सुविधा जुटाना रंगमंच का काम है और रंगमंच को नाटक के अनुरूप अपना स्वरुप धारण करना चाहिए।"

- यही कारण है कि प्रसाद जी के नाटकों की (ध्रुवस्वामिनी को छोड़कर) अभिनेयता पर प्रश्नचिन्ह बना रहता है।

- जयशंकर प्रसाद स्वभाव से मूलतः कवि थे। अतः उन्होंने अपने नाटकों में भी गीतों का प्रयोग किया है।

- आकस्मिकता का प्रयोग उनके नाटकों की एक विलक्षण विशेषता है।

- जयशंकर प्रसाद ने सोद्देश्यता और रचनात्मकता से अनुप्रेरित नाटकों की रचना की है जिसका मुख्य स्वर राष्ट्रीय मुक्ति और नवजागरण की भावना को जगाना रहा है।

- उन्होंने अपनी नाट्य भाषा का निरंतर परिष्कार एवं परिमार्जन किया।

- इस प्रकार जयशंकर प्रसाद एक ऐसे युग प्रवर्तक नाटककार हैं जिन्होंने इतिहास को समकालीन दौर का प्रतिनिधि बनाकर प्रस्तुत किया और हिंदी नाटक को एक नयी दिशा दी।

'स्कन्दगुप्त' : एक परिचय

- स्कन्दगुप्त नाटक भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण कालखंड गुप्त साम्राज्य की ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर जयशंकर प्रसाद द्वारा सन 1928 में लिखा गया एक ऐतिहासिक नाटक है। यह नाटक गुप्त वंश के प्रसिद्ध सम्राट स्कन्दगुप्त के जीवन पर आधारित है जिन्होंने पांचवी सदी में उज्जैन पर शासन किया और भारत के उत्तर तथा पश्चिम के क्षेत्रों से विदेशी आक्रमणकारियों, शकों और हूणों के साम्राज्य को समाप्त किया।

- कथा वस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, दृश्यों की योजना, अंतर्द्वंद आदि सभी दृष्टियों से जयशंकर प्रसाद का यह सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है।

- ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित होते हुए भी वर्तमान की समस्याओं का उद्घाटन ही इस नाटक का मूल प्रयोजन है। यह नाटक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना से परिपूर्ण है।

- नाटक के वस्तु विन्यास में इतिहास, अनुमान और कल्पना का सहारा लिया गया है।

- प्रसाद जी ने स्वगत कथन के द्वारा पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद का चित्रण किया है। गीतों की भरमार है।

- स्कन्दगुप्त नाटक की भाषा संस्कृतनिष्ठ, तत्सम शब्दावली से युक्त और क्लिष्ट है फिर भी भाषा में अद्‌भुत नाटकीयता है। वाक्य विन्यास और शब्दावली सुगठित और कसी हुई है।

- अनावश्यक पात्रों एवं दृश्यों की भरमार इस नाटक की अभिनेयता के सामने चुनौती है।

'स्कन्दगुप्त' में इतिहास और कल्पना

- यह नाटक ऐतिहासिक कथानक और लेखकीय कल्पना के समन्वय का अद्भुत उदाहरण है।

- स्कन्दगुप्त एक ऐतिहासिक पात्र हैं जिनका शासनकाल पांचवी सदी ई० में माना जाता है। उनके द्वारा उज्जैन पर शासन करना और भारत के उत्तर तथा पश्चिम क्षेत्रों से शकों और हूणों के साम्राज्य को समाप्त करने की घटना ऐतिहासिक है जिसका प्रमाण इतिहास के ग्रंथों और शिलालेखों से मिलता है।

- जयशंकर प्रसाद द्वारा इस ऐतिहासिक कथानक में स्कन्दगुप्त के आतंरिक (पारिवारिक) कलह का उल्लेख उनकी कल्पना शक्ति का प्रमाण है।

- स्कन्दगुप्त का वीर, महापराक्रमी, दृढनिश्चयी चरित्र ऐतिहासिक है लेकिन उनका व्यक्तिगत जीवन और उस जीवन में व्याप्त अवसाद लेखकीय कल्पना का परिणाम है।

- गुप्त साम्राज्य के सम्राट कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य की बड़ी रानी का नाम इतिहास सम्मत नहीं है लेकिन जयशंकर प्रसाद ने अपनी कल्पना से उनका नाम देवकी बताया है।

- स्कन्दगुप्त के विरुद्ध रचे जा रहे षड़यंत्र में भतार्क द्वारा अनंत देवी का साथ देने की घटना भी प्रामाणिक नहीं है। अतः लेखकीय कल्पना का प्रमाण है।

- इस नाटक के कई पुरुष और अधिकतर स्त्री पात्र जयशंकर प्रसाद की कल्पना की उपज हैं। इतिहास प्रसिद्ध कथानक के बीच देवसेना और विजया का स्कन्दगुप्त की ओर आकर्षण, स्कन्दगुप्त का लहरों में बह जाना, श्मशान भूमि का प्रसंग आदि काल्पनिक प्रसंग हैं।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि यह नाटक इतिहास और लेखकीय कल्पना का सुन्दर समन्वय है।

'स्कन्दगुप्त' की राष्ट्रीय चेतना

- इतिहास के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को समझने और उनका समाधान ढूँढने का प्रयास जयशंकर प्रसाद की रचनात्मक विशिष्टता है।

- स्कन्दगुप्त नाटक का कथानक भी ऐतिहासिक है लेकिन वह आधुनिक इन अर्थो में है कि जयशंकर प्रसाद ने इसे अपने समय की राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितिओं से प्रभावित होकर लिखा।

- इतिहास के माध्यम से उन्होंने वर्तमान को समझने की एक नयी दृष्टि दी। 'विशाख' की भूमिका में उन्होंने कहा – "मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन करने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया है"।

- स्कन्दगुप्त नाटक के माध्यम से प्रसाद जी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का अलख जगाते हैं। स्कन्दगुप्त के शासनकाल में विदेशी आक्रान्ताओं का आतंक और ब्राह्मण और बौद्ध धर्म के बीच संघर्ष चरम पर था। प्रसाद जी के समय भी वही समस्याएँ थीं। यहाँ विदेशी आक्रमणकारी अंग्रेज़ थे और ब्राह्मण और बौद्ध की जगह हिन्दू – मुस्लिम थे।

- स्कन्दगुप्त द्वारा अपने शौर्य, पराक्रम द्वारा शकों और हूणों को समाप्त करने के लिए सबको संगठित करना और सफल होना, वर्तमान समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखाता है। उसका यह कहना कि "यदि कोई साथी न मिला तो साम्राज्य के लिए नहीं जन्मभूमि के उद्धार के लिए मैं अकेला ही युद्ध करूँगा"; धर्म, जाति, नस्ल के आधार पर बंटे भारतवासियों को निश्चित रूप से प्रेरणा प्रदान करता है।

- अतः हम कह सकते हैं कि जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक फलक पर वर्तमान की समस्याओं का ही चित्रण किया है और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में वे सफल रहे हैं। राष्ट्रीय गौरव की झलक प्रस्तुत करते हुए जयशंकर प्रसाद कहते हैं –

"वीरों ! हिमालय के आंगन में उसे
प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और
पहनाया हीरों का हार।"

- नन्द दुलारे वाजपेयी कहते हैं – "प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में बड़ी कुशलता के साथ अपने समय की वर्तमान राष्ट्रीय जीवन की समस्याओं का जो चित्रण किया है, उनसे वर्तमान की चेतना को नवजागरण का आलोक मिलता है।"

निष्कर्ष

- हिंदी नाट्य विधा को एक नवीन दिशा की ओर अग्रसर करने वाले, हिंदी के सुप्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों का सृजन साभिप्राय किया।

- चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु प्रसाद जी के ऐसे ही ऐतिहासिक नाटक हैं जिनमें अतीत का गौरवगान, देशभक्त का सच्चा स्वरुप आदि अनेक घटनाओं की सर्जना उन्होंने अपने युग और समय की तत्कालीन मांग के अनुरूप, राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए ही किया है।

- इन ऐतिहासिक नाटकों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि प्रसाद जी ने अतीत के इतिहास में अपने समय की राष्ट्रीय-जातीय चिंताओं तथा स्वातंत्र्य के प्रयत्नों और व्यवधानों को प्रतिबिंबित करने का प्रयास किया है।

- जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों के विषय में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है – "यद्यपि प्रसाद के नाटक ऐतिहासिक हैं-पर उनमें आधुनिक आदर्शों और भावनाओं का आभास इधर-उधर बिखरा मिलता है।"

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद
2. हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह
3. हिंदी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा
4. 20 वीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी

धन्यवाद